ब्राह्मी लिपि प्रवेशिका

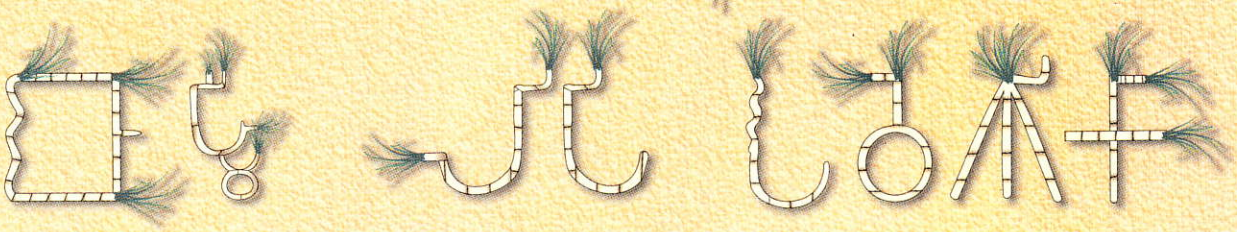

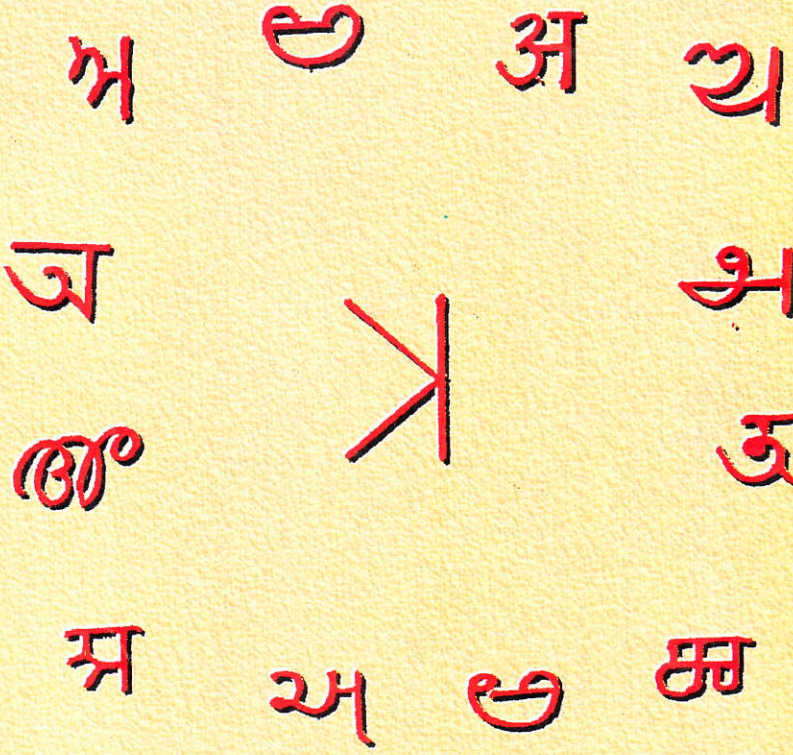

कुन्दकुन्द भारती
नयी दिल्ली

अ

अमरूद

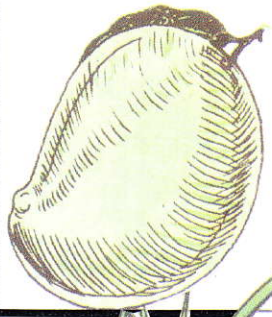

आ

आम

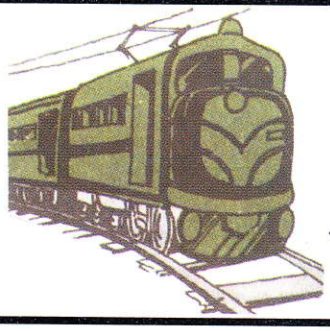

इ

इंजन

ई

ईख

उ

उल्लू

ऊ

ऊंट

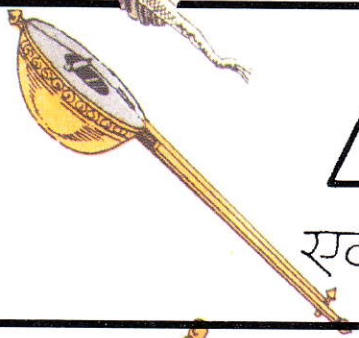

ए

एकतारा

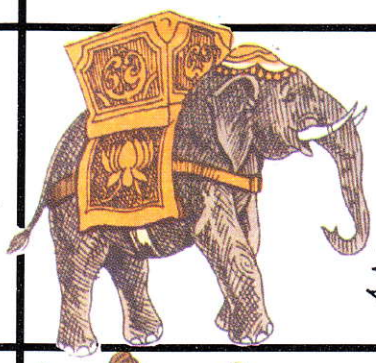

ऐ

ऐरावत

ओ

ओखली

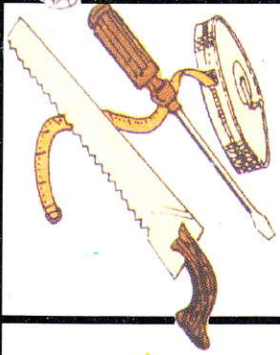

औ

औजार

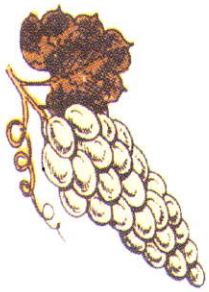

अं

अंगूर

अः

क कमल

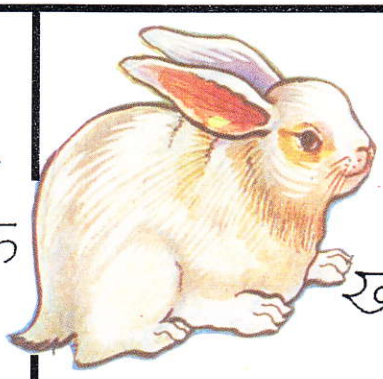

ख खरगोश

ग गमला

घ घर

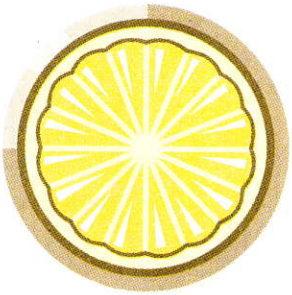

ङ

च चम्मच

छ छड़ी

ज जग

झ झरना

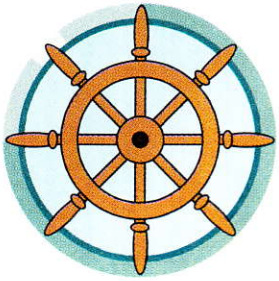

ञ

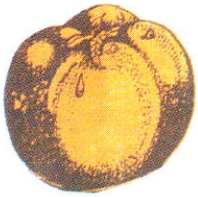

ट

टमाटर

ठ

ठेला

ड

डलिया

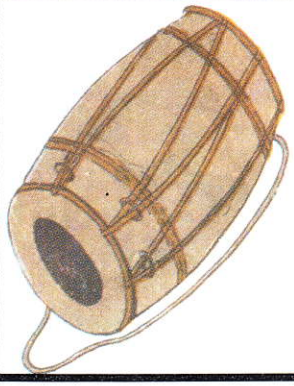

ढ

ढोलक

ण

णमः

त

तरबूज

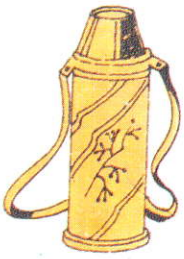

थ

थरमस

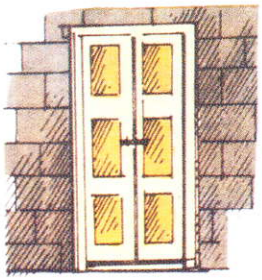

द

दरवाजा

ध

धनुष

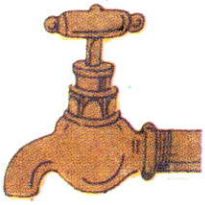

न

नल

प

पतंग

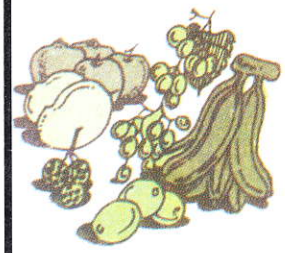

फ

फल

ब

बस

भ

भगत

म

मटर

य

यज्ञ

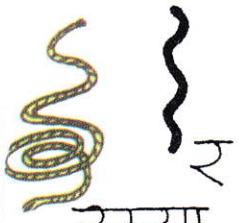

र

रस्सा

ल

लट्टू

व

वर्षा

श

शलगम

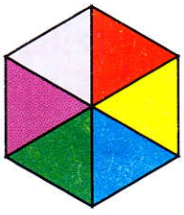

ष

षट्कोण

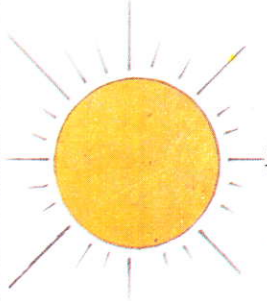

स

सूरज

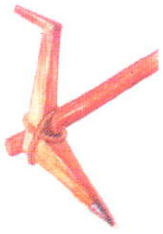

ह

हल

स्वर —

व्यंजन —

स्वर-चिह्न —

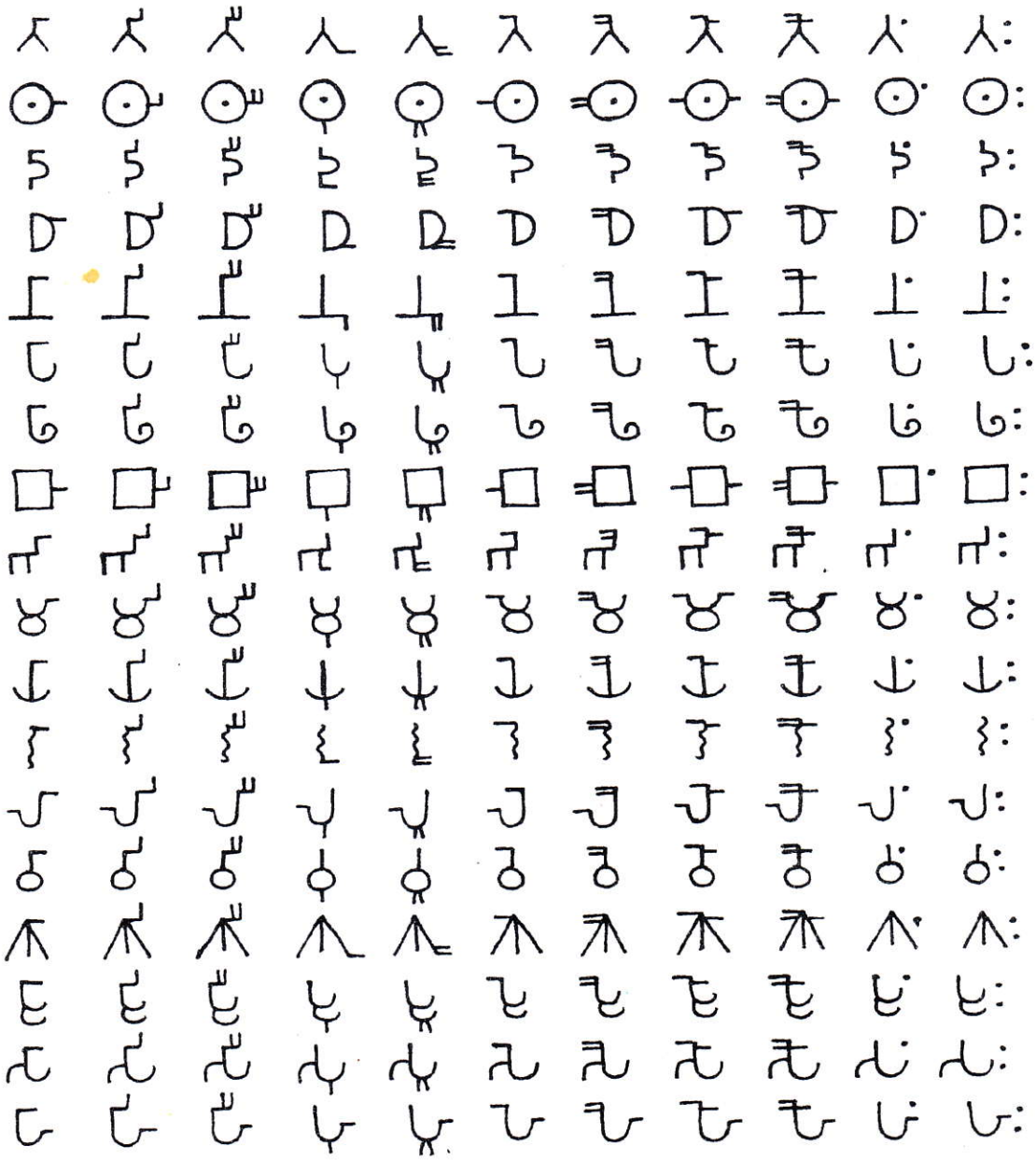

संयुक्त-व्यंजन

क्य क्र ख्य ग्य त्य त्र त्व द्र द्व ध्य ध्र
न्य प्र प्त ब्र भ्य म्य म्ह व्य व्व र्व/व्र श्व
स्त स्प स्म स्य स्त्र स्व ह्य ह्व ह्म

अ तथा आ की मात्रा का प्रयोग

अब छत चल रथ हठ डग जय

नर कल सब मत घर थल चख

कमल इधर भवन पनघट बरतन अचकन

हार बाबा ताला छाता राजा माता आकाश गाजर

अनार पावन उजाला चावल पाठशाला महाराज

बाजार जाकर फल ला. अनानास खा.

अनार का रस चख. आम का फल ला.

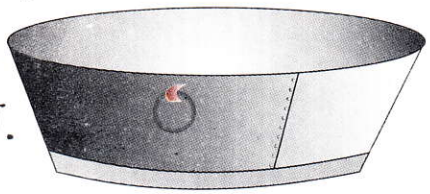

नल पर जा टब भर जल ला.

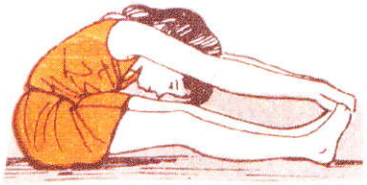

उठ चल कसरत कर.

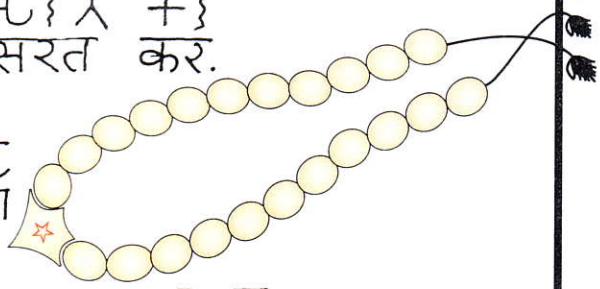

मामा आया बाजा तथा हार लाया

आकाश पर बादल छाया.

बादाम का हलवा बना कर खा.

इ तथा ई की मात्रा का प्रयोग

कवि दिन बिल तिथि खिल रवि निधि विधि छवि

किताब हिरण सितार निशान तिलक हिसाब किशमिश

मीरा गीत पानी हाथी मीन वीणा डाली थाली कली झील

शीतल असली छतरी बकरी कहानी दिवाली मछली

दादी नानी बिजली जीवन गरमी सरदी विशाल

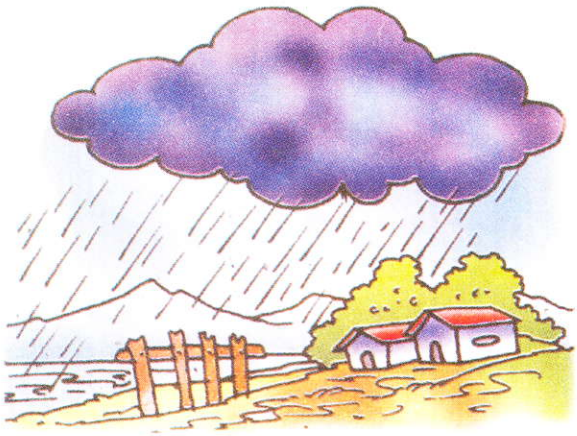

बादल छाए बिजली चमकी

पानी बरसा रिमझिम छमछम

गरमी भागी हरियाली छायी

मछली जल की रानी

जीवन इसका पानी

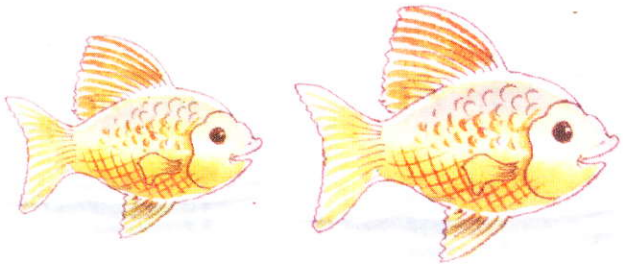

शीला आयी खीर लायी. आलसी मत बन. किताब निकाल.

किशमिश खा. बछिया ला. डिबिया इधर रख. निशान हटा.

उ तथा ऊ की मात्रा का प्रयोग

मुख कुश पुल रुक शुभ तुम धुन बुन मधु

चतुर बहुत मधुर कछुआ धनुष घुटना रुपया गुलाब

दूध धूप झूला कूप खूब फूल सूत शूल भालू जूला चूक

ऊन पूजा कपूर खजूर जरूर सूरज बबूल चूरण मूसल

सूरज निकल आया.

उठ नहा कर पूजा कर.

समय पर पाठशाला जा

बहुत धीमा मत चल.

मुख तथा नाखून सदा साफ रख. सुराही उठा कर इधर ला.

दूध पीकर बाहर जा. ककड़ी और भिण्डी की भाजी खा. ऊन ला.

सुरेश रुक जा. एक रुपया ला. यह यमुना का पुल था.

झूठ न कह. धूप खिली. कछुआ बहुत

धीमी चाल चला फिर भी जीत गया.

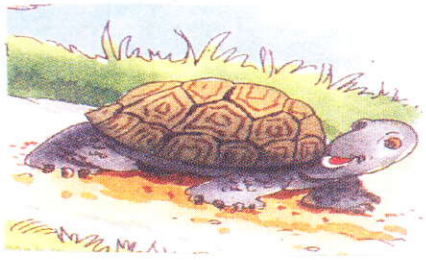

ए तथा ऐ की मात्रा का प्रयोग

सेब खेल मेज

ढेर

केला बेटा

शेर

सवेरा लेखनी

नरेश जलेबी सितारे हथेली

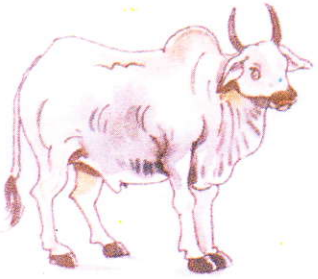

बैल तैर गैस

लालटेन जैसे भैया

पैसे

पैर

थैला चैन रैन

रमेश सैनिक

पैदल तैयार

ऐनक

वैरागी मैदान कैलाश सैर वैशाली फैला हैरान

चमेली का तेल हथेली पर लगाकर सिर पर मल ले.

सवेरे उठ कर पैदल सैर करने जाओ. विशाल मेज

पर अमरूद , केले और सेब रख. बालक खेलने के

लिए मैदान की ओर तेजी से चल दिया है. थैला पैसे

से भरा हुआ है. किसान बैल से हल खेत में चलाता है

ओ तथा औ की मात्रा का प्रयोग

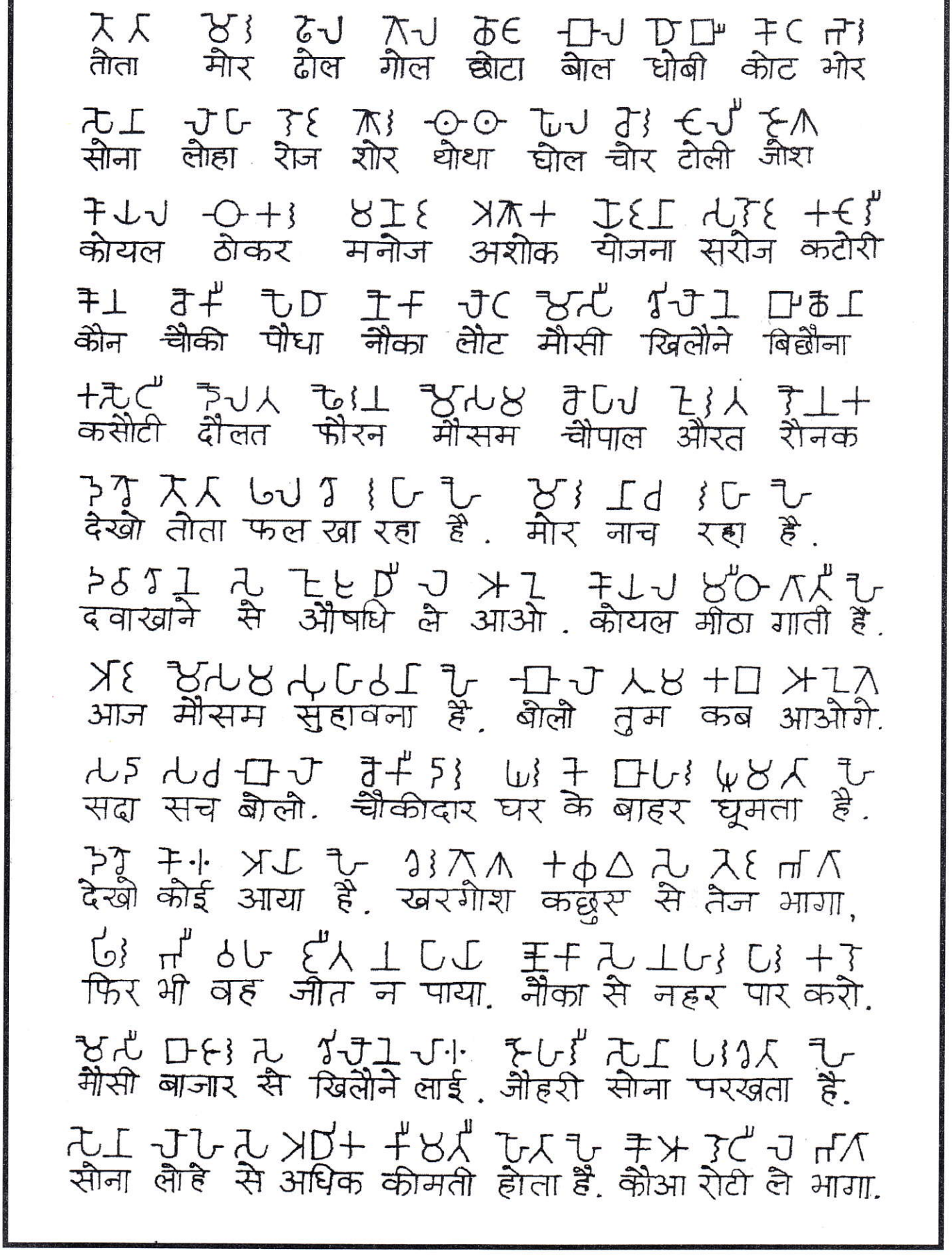

अं तथा अः का प्रयोग

कंठ वंश घंटी झंडा शंख ऊंट बायां चांद आंख

मंदिर चंदन भुजंग अंगूर बंगला बांसुरी सिंहासन

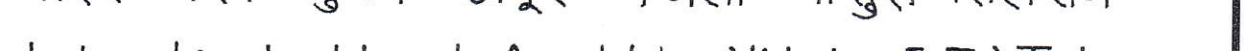
पुनः छः फलतः दुःख नमः अंततः साधारणतः

मैं सवेरे छः बजे उठता हूँ. फिर बाग में घूमता हूँ.

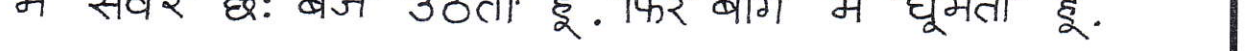
तुम अपने कंठ में माला डालो. शेर जंगल का राजा है.

संख्याएं

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

वर्णों के उपलब्ध अन्य रूप

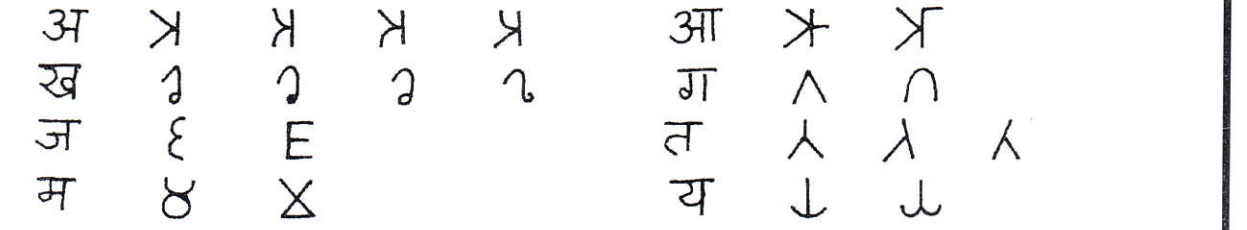
अ आ
ख ग
ज त
म य

स्वर चिह्न के उपलब्ध भिन्न रूप

मो

ᛦ	ᛦᚱᛟᚹ	ᛦ	ᛦᚱᚹ
∴	∴ᛖᛏ	᛫	᛫ᚠᚱ
ᛚ	ᛚᛯᚴ	ᛏ	ᛏᚲᚳ
ᚤ	ᚤᛋᚾᚤ	ᚤ	ᚤᛟᚾᚤ
ᛊ	ᛊᚳᚠᛊ	ᛊ	ᛊᚴᚾ
ᛞ	ᛞᚾᚴ	ᛞ	ᛞᚴᚾ
ᛗ	ᛗᚾᛈ	ᛗ	ᛗᚴᚾ
ᛒ	ᛒᚾᛉᛏ	ᛒ	ᛒᚱᚾᛏ
ᛏ	ᛏᚾᛏ	ᛏ	ᛏᚾᛏ
ᛁ	ᛁᚾᛏ	ᛁ	ᛁᚾᛏ
ᛟ	ᛟᚾᛏ	ᛟ	ᛟᚾᛏ
ᚱ	ᚱᚾᛏ	ᚱ	ᚱᚾᛏ
ᚳ	ᚳᚾᛏ	ᚳ	ᚳᚾᛏ
ᚴ	ᚴᚾᛏ	ᚴ	ᚴᚾᛏ
ᚷ	ᚷᚾᛏ	ᚷ	ᚷᚾᛏ
ᚹ	ᚹᚾᛏ	ᚹ	ᚹᚾᛏ
ᚺ	ᚺᚾᛏ	ᚺ	ᚺᚾᛏ
ᚾ	ᚾᚾᛏ	ᚾ	ᚾᚾᛏ
ᛁ	ᛁᚾᛏ	ᛁ	ᛁᚾᛏ
ᛃ	ᛃᚾᛏ	ᛃ	ᛃᚾᛏ
ᛇ	ᛇᚾᛏ	ᛇ	ᛇᚾᛏ
ᛈ	ᛈᚾᛏ	ᛈ	ᛈᚾᛏ
ᛉ	ᛉᚾᛏ	ᛉ	ᛉᚾᛏ
ᛋ	ᛋᚾᛏ	ᛋ	ᛋᚾᛏ
ᛏ	ᛏᚾᛏ	ᛏ	ᛏᚾᛏ
ᛒ	ᛒᚾᛏ	ᛒ	ᛒᚾᛏ
ᛖ	ᛖᚾᛏ	ᛖ	ᛖᚾᛏ
ᛗ	ᛗᚾᛏ	ᛗ	ᛗᚾᛏ
ᛚ	ᛚᚾᛏ	ᛚ	ᛚᚾᛏ
ᛝ	ᛝᚾᛏ	ᛝ	ᛝᚾᛏ
ᛟ	ᛟᚾᛏ	ᛟ	ᛟᚾᛏ
ᛞ	ᛞᚾᛏ	ᛞ	ᛞᚾᛏ
ᚪ	ᚪᚾᛏ	ᚪ	ᚪᚾᛏ
ᚫ	ᚫᚾᛏ	ᚫ	ᚫᚾᛏ
ᚣ	ᚣᚾᛏ	ᚣ	ᚣᚾᛏ
ᛠ	ᛠᚾᛏ	ᛠ	ᛠᚾᛏ
ᛡ	ᛡᚾᛏ	ᛡ	ᛡᚾᛏ

सम्राट् खारवेल शिलालेख, उत्कल (उड़ीसा)

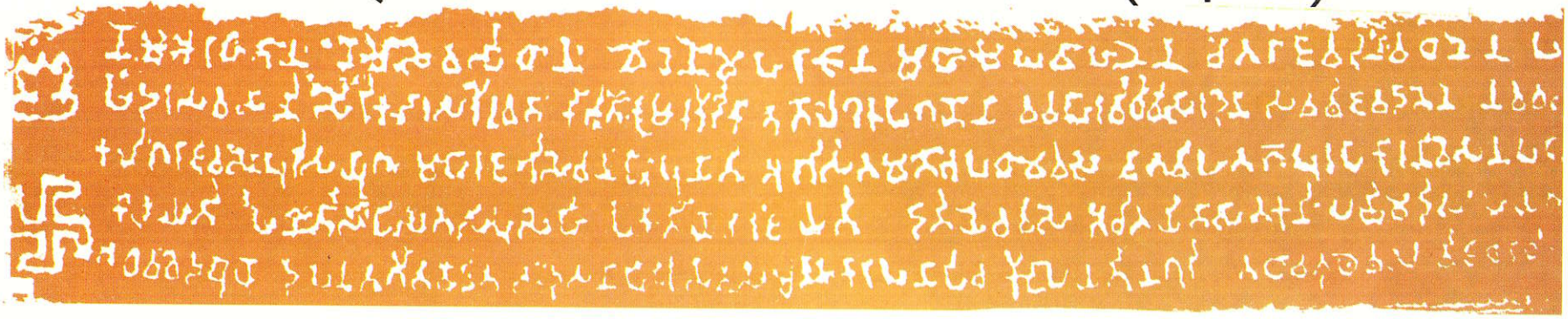

लिपि ब्राह्मी, भाषा औड्रमागधी, समय ई॰पू॰ दूसरी शताब्दी

णमो अरिहंतानं णमो सवसिधानं ऐरेण महाराजेन महामेघवाहनेन चेतिराजंवसवधेन.....

कलिंग के खारवेल सम्राट् महामेघवाहन तथा उनके राज्यकाल के तेरहवें वर्ष में (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) उदयगिरी में उनका जैन सम्मेलन हुआ.....

King Mahameghevahana Kharvela of Kalinga and his Jaina council held at Udayagiri in the 13th year of his reign (2nd Century B.C.)

(89th Inter-Parliamentary Conference), 1979

पुष्पदंतसागर जी महाराज

NAMO ARIHANTANAM,

NAMO SIDDHANAM,

NAMO AIRIYANAM,

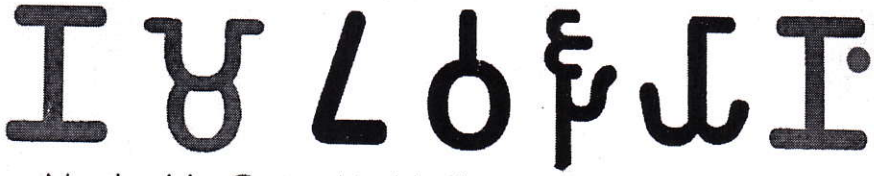

NAMO UVAJJHAYANAM,

NAMO LOYE SAVVA-SAHUNAM.

-आराध्य, आराधक
और आराधन के
अभूतपूर्व संगम का नाम
है णमोकार मंत्र।
- जो मकारों का
मारक और विकारों
का वारक है।
- जो पाप से निवृत्ति और
पुण्य में प्रवृत्ति कराता है।
जिसमें अरहंत का अपूर्व
दर्शन है,
सिद्धों का स्वात्मानुभावी
गुण, आचार्यों की
अपरिमेय उपस्थिति,
उपाध्यायों का उपदेशपरक
बोध,
और साधुओं की स्व से
सर्व की दिव्य यात्रा है।
ऐसे आराध्य, आराधक
और आराधन के अभूतपूर्व
संयोग को
प्रणाम-प्रणाम-प्रणाम...

Scanned by CamScanner